ज्येष्ठा (देवी)

ज्येष्ठ या **ज्येष्ठ** (संस्कृत : ज्येष्ठा , *ज्येष्ठा* , "सबसे बड़ा" या "बड़ा") अशुभ चीजों और दुर्भाग्य की हिंदू देवी है। [1] उन्हें बड़ी बहन और सौभाग्य और सुंदरता की देवी लक्ष्मी की विरोधी माना जाता है ।

ज्येष्ठ:
अशुभ चीजों और दुर्भाग्य की देवी

ज्येष्ठ, कैलास मंदिर, कांचीपुरम । [1]

देवनागरी	ज्येष्ठा
संस्कृत लिप्यंतरण	ज्येष्ठ
संबंधन	देवी
पर्वत	गधा
व्यक्तिगत जानकारी	
एक माँ की संताने	लक्ष्मी
बातचीत करना	ऋषि दशहा

ज्येष्ठ अशुभ स्थानों और पापियों से जुड़ा है। वह सुस्ती, गरीबी, दुःख, कुरूपता और कौवे से भी जुड़ी हुई है। उन्हें कभी-कभी दुर्भाग्य की एक और देवी अलक्ष्मी के साथ पहचाना जाता है। उनकी पूजा उन महिलाओं के लिए निर्धारित थी, जो उन्हें अपने घरों से दूर रखना चाहती थीं।

ज्येष्ठ हिंदू परंपरा में 300 ईसा पूर्व के रूप में प्रकट होता है। ७वीं-८वीं शताब्दी ईस्वी में दक्षिण भारत में उनकी पूजा अपने चरम पर थी , लेकिन १०वीं शताब्दी तक, उनकी लोकप्रियता ने उन्हें गुमनामी में धकेल दिया। आज भी ज्येष्ठा की कई प्राचीन प्रतिमाएं मौजूद हैं, हालांकि उनकी पूजा विरले ही की जाती है।

विवरण और आइकनोग्राफी

ज्येष्ठ की प्रतिमा के बारे में विस्तार से *बताने* वाले *ग्रंथ* हैं: अगम जैसे *अमशुमद्भेडगामा* , *सुप्रभेडगामा* और *पूर्वकारंगमा* ; *विष्णुधर्मोत्तर पुराण* और अन्य छोटे संदर्भ *Baudhayanagrhyasutra* । [3] ८वीं शताब्दी की प्रतिमा और पूजा पद्धतियों का विवरण देते हुए सबसे पहले दर्ज किया गया द्विभाषी शिलालेख मदुरै के पास तिरुपरनकुनराम की गुफाओं में पाया जाता है । [४]

ज्येष्ठा को आमतौर पर दो भुजाओं के साथ चित्रित किया जाता है। उसकी नाक इस हद तक लंबी और उभरी हुई है कि उसे कभी-कभी हाथी मुखी कहा जाता है। [३] ज्येष्ठा का वर्णन इस प्रकार किया गया है कि "बड़े लटके हुए स्तन उसकी नाभि तक उतरते हैं, एक पिलपिला पेट, मोटी जांघें, उभरी हुई नाक, निचले होंठ लटके हुए, और स्याही के रंग में हैं।" [५] उसके बड़े पेट को उसके सूजे हुए लटकते स्तनों को सहारा देने के लिए वर्णित किया गया है। उसका रंग काला या लाल है। वह नीले-काले या लाल रंग के वस्त्र पहनती है। उसे अक्सर जमीन पर अपने पैरों के साथ एक सिंहासन पर आराम से बैठे हुए दिखाया गया है। [3]

ग्रंथों के विवरण के अनुसार, ज्येष्ठा के दाहिने हाथ में एक नीला या सफेद कमल है। उनके बाएं हाथ में एक पानी का बर्तन रखा जाता है या उनके सिंहासन के पास रखा जाता है या हाथ में रखा जाता है जो *अभय* मुद्रा बनाता है - सुरक्षा का इशारा। उसका बायां हाथ आमतौर पर उसकी सीट पर या उसकी जांघ पर टिका होता है। [५] कभी-कभी, ज्येष्ठा अपने हाथ में झाड़ू रखती हैं। [५]

ज्येष्ठा विभिन्न आभूषण पहनती है और माथे पर *तिलक का* निशान है, जो उसकी विवाहित स्थिति का संकेत है। [५] उसके बालों को आमतौर पर लट में *बांधा* जाता है और उसके सिर के ऊपर ढेर किया जाता है या *वासिकाबंध* नामक केश में उसके सिर के चारों ओर घाव किया जाता है । [5] [6]

ज्येष्ठा में एक कौवे को चित्रित करने वाला एक बैनर है, और इसे तमिल में "कौवा-बैनर" (*कक्कईकोदियाल*) कहा जाता है । दो परिचारक देवी-देवताओं का एक समूह कभी-कभी उसके पास खड़ा होता है, आमतौर पर एक कौवा और एक झाड़ू लेकर। [७] कभी-कभी एक कौवा उसके पास खड़ा हो जाता है। [५] ज्येष्ठा को अक्सर दो परिचारकों के साथ चित्रित किया जाता है, कभी-कभी उनके बेटे और बेटी के रूप में व्याख्या की जाती है। आदमी बैल का सामना कर रहा है और रस्सी या रस्सी रखता है। महिला को एक शंक्वाकार मुकुट के साथ एक सुंदर युवती के रूप में दर्शाया गया है। [8]

हालांकि ज्येष्ठा को लगभग कभी भी एक पर्वत पर सवार नहीं दिखाया गया है , लेकिन अधिकांश ग्रंथों में उन्हें अलक्ष्मी की तरह गधे की सवारी के रूप में वर्णित किया गया है। अन्य ग्रंथों में, वह शेरों द्वारा रथ में खींची जाती है या उसके बाद बाघ या ऊंट या शेर पर सवार होते हैं। [8]

किंवदंतियां

समुद्र मंथन प्रकरण (सी। 1820) के विभिन्न दृश्य। दाहिने निचले कोने में, ज्येष्ठा को एक काले रंग की महिला के रूप में चित्रित किया गया है, जो गंदे कपड़े पहने हुए है और एक झाड़ू और एक पैन ले रही है।

अधिकांश हिंदू किंवदंतियां ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन के दौरान ज्येष्ठ के जन्म के बारे में बताती हैं । उसे आमतौर पर तब पैदा होने के लिए वर्णित किया जाता है जब हलाहला विष समुद्र से बहता है, जबकि लक्ष्मी - उसके विपरीत, सौभाग्य की देवी - का जन्म तब होता है जब जीवन का अमृत निकलता है। [९]

में *पद्म पुराण* , जब सागर शुरू की मंथन, जहर पहले समुद्र से प्रकट होता है। इसे भगवान शिव ने निगल लिया और फिर ज्येष्ठ लाल वस्त्र पहने समुद्र से प्रकट हुए। जब वह देवताओं से पूछती है कि उसे क्या करना चाहिए, तो उसे अशुभ स्थानों पर रहने का आदेश दिया जाता है। उसे दुख और दरिद्रता लाने के लिए वर्णित किया गया है। कहा जाता है कि वह झगड़े वाले घरों में रहती है, जहाँ झूठे कठोर भाषा का प्रयोग करते हैं, जहाँ दुष्ट और पापी पुरुष रहते हैं, जहाँ लंबे बाल, खोपड़ी, हड्डियाँ, राख या लकड़ी का कोयला (एक अपरंपरागत भिक्षु के लक्षण) हैं। [१०]

के अनुसार *लिंग पुराण* , भगवान विष्णु अच्छे और बुरे में दुनिया बिताते हैं। वह लक्ष्मी (श्री) और ज्येष्ठ का निर्माण करते हैं, दोनों का जन्म ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन से हुआ है। जहां लक्ष्मी का विवाह विष्णु से होता है, वहीं ज्येष्ठ का विवाह ऋषि दशहा से होता है। ऋषि को जल्द ही पता चलता है कि उनकी बदसूरत पत्नी किसी भी शुभ चीज की आवाज या दृष्टि को सहन नहीं कर सकती है और विष्णु या ऋषि मार्कंडेय (कुछ संस्करणों में) से शिकायत करती है । विष्णु / मार्कंडेय दशहा को ज्येष्ठ को केवल अशुभ स्थानों पर ले जाने की सलाह देते हैं। ज्येष्ठा को धार्मिक लोगों से दूर रहने के लिए कहा गया है। ज्येष्ठ तब *अलक्ष्मी* , "एक जो अशुभ है" की उपाधि अर्जित करता है। वह उन जगहों पर रहती है जहाँ "परिवार के सदस्य झगड़ते हैं और बड़े अपने बच्चों की भूख को नज़रअंदाज़ करते हुए खाना खाते हैं" उन्हें झूठे भिक्षुओं, नग्न जैन भिक्षुओं और बौद्धों की संगति में सहज होने के लिए वर्णित किया गया है , जिन्हें हिंदुओं द्वारा विधर्मी माना जाता था। अंततः अपने असामाजिक स्वभाव से थककर, दशहा ने ज्येष्ठा को एक ऐसे स्थान पर छोड़ दिया जहाँ गैर- वैदिक (विधर्मी) अनुष्ठान किए जाते हैं। वह फिर राहत के लिए विष्णु के पास जाती है। विष्णु ने फैसला किया कि ज्येष्ठा महिलाओं के प्रसाद से बनी रहेगी। [११] [१२]

कम्बा रामायण के अनुसार , ज्येष्ठ ब्रह्मांडीय महासागर के मंथन के दौरान प्रकट होता है। हिंदू त्रिमूर्ति - त्रिमूर्ति उसे ढूंढती है और उसे अशुभ स्थानों पर रहने का आदेश देती है। ज्येष्ठ के रूप में लक्ष्मी से पहले उभरा, ज्येष्ठा को लक्ष्मी की बड़ी बहन माना जाता है। इस प्रकार, ज्येष्ठ को *मुदेवी* या *मुदेवी* भी कहा जाता है । [2]

शैव पुराण उसे सर्वोच्च देवी (*परशक्ति*) के आठ भागों में से एक के रूप में *बताते हैं* , जो विभिन्न तरीकों से मानव जीवन को नियंत्रित करता है। [2]

संघों

ज्येष्ठा अपने परिचारकों के साथ

ज्येष्ठा एक हिंदू पत्नी के नकारात्मक को दर्शाती है, जबकि लक्ष्मी सकारात्मक को दर्शाती है। ज्येष्ठा एक बहुविवाहित परिवार में वरिष्ठ पत्नी से भी जुड़ी हुई है - जिसे संस्कृत में *ज्येष्ठा* भी कहा जाता है। वह अपने नाम *नक्षत्र* (नक्षत्र) - *ज्येष्ठ* से भी जुड़ी हुई है , जो देवी के नकारात्मक गुणों को विरासत में लेती है। यदि कोई दुल्हन ज्येष्ठा नक्षत्र में घर में प्रवेश करती है, तो उसके सबसे बड़े बहनोई की मृत्यु मानी जाती है। [13]

लेस्ली के अनुसार, ज्येष्ठ को हाथी-सामना के रूप में वर्णित किया गया है और बाधाओं को दूर करने के लिए आह्वान किया गया है, हाथी के सिर वाले भगवान गणेश की भूमिका , ज्येष्ठा गणेश के अग्रदूत हो सकते हैं। भारत के कुछ हिस्सों में, उन्हें चेचक की देवी शीतला देवी के रूप में पहचाना जाता है । कमल, *अभय मुद्रा* और लक्ष्मी के साथ उसका रिश्ता उसे वैष्णव (विष्णु से संबंधित) *पंथ* के साथ *जोड़ता है* । उसके भयानक पहलू और शक्तिवाद के साथ उसका जुड़ाव एक शैव (शिव से संबंधित) संबंध का सुझाव देता है। कौआ - दुर्भाग्य का प्रतीक - निरति और यम जैसे अपने देवताओं को जोड़ता है । [१४] किंस्ले ज्येष्ठ को धूमावती के साथ जोड़ता है , जो एक विधवा देवी है, जो तांत्रिक महाविद्या देवी समूह का हिस्सा है । ज्येष्ठ की तरह, धूमावती काली, बदसूरत है और कौवे से जुड़ी है। ज्येष्ठा की भाँति वह झगड़ों, अशुभ स्थानों में निवास करती है और क्रोधी स्वभाव की होती है। [१५] *शारदातिलक-तंत्र* के टीकाकार लक्ष्मण देसिका, *धूमावती की* पहचान ज्येष्ठ से करते हैं। [16]

जबकि ज्येष्ठा सुंदर शरीर वाली दयालु (*सौम्य*) हिंदू देवी-देवताओं के वर्ग में फिट नहीं होती है, वह भयानक विशेषताओं, क्षीण शरीर और द्वेषपूर्ण गुणों वाली *उग्र* (*उग्र*) देवियों के अन्य वर्ग के विपरीत है । आलस की देवी के रूप में, ज्येष्ठा की कुरूपता और मोटापा उनके आलस्य से बहता है। वह केवल अशुभ और कष्टदायक है, लेकिन भयानक नहीं है। [९]

पूजा

ज्येष्ठ हिंदू परंपरा में जल्दी प्रकट होता है। [५] वह पहली बार *बौधायनगृहसूत्र* (३०० से ६०० ईसा पूर्व) में दिखाई देती हैं। [१७] उनकी कई छवियां अभी भी मौजूद हैं, आमतौर पर गांवों के बाहरी इलाके में। 7वीं-8वीं शताब्दी ईस्वी के दौरान, वह दक्षिण भारत में एक लोकप्रिय देवी थीं । जैसे-जैसे शक्तिवाद फैलता गया, उसकी प्रसिद्धि धीरे-धीरे कम होती गई। [18] वैष्णव Alvar संत थोडरदिपपोडी अल्वर , 9 वीं शताब्दी के लिए 7 तारीख के बीच दिनांकित, "मूर्ख भक्तों" जो Jyestha, जो उन्हें सच्चाई से दूर रखता है पूजा की संख्या पर टिप्पणी नहीं। उसने फैसला किया कि उसकी पूजा करना बेकार है। [३] [१८] १०वीं शताब्दी तक, उसकी पूजा कमोबेश बंद हो गई। [2]

ज्येष्ठा की छवियों की आज बहुत कम पूजा की जाती है। [१८] उन्हें मंदिरों में उपेक्षित कोनों में बिना मान्यता के रखा जाता है या मंदिरों से बाहर फेंक दिया जाता है। [१८] जहां वे अब भी पहचाने जाते हैं, वे भय के पात्र हैं। उत्तरमेरूर के एक मंदिर में ज्येष्ठ की मूर्ति को जमीन की ओर मुख करके रखा जाता है। माना जाता है कि देवी की मात्र एक झलक गांव पर मौत लाती है। [18]

हालाँकि, लोकप्रियता के चरम पर, ज्येष्ठा एक देवी थीं, जिन्हें प्रतिदिन एक अच्छी पत्नी द्वारा प्रसन्न करने की आवश्यकता थी। *Stridharmapaddhati* घोषणा करता है कि एक पत्नी अपने स्वयं के भोजन करने से पहले Jyestha को भोजन प्रसाद प्रदान करनी होगी। जो ऐसा नहीं करेगा वह मृत्यु के बाद नरक में जाएगा; लेकिन जो इस दिनचर्या का पालन करता है उसे संतान और समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त होता है। [18] *Bodhayana सूत्र* भी Jyestha की पूजा पर बताते हैं। [३] *लिंग पुराण* में पौराणिक कथा के *अनुसार* , यह माना जाता है कि घरों की महिलाएं जो देवी को प्रसाद देकर प्रसन्न करती हैं, वे उन्हें अपने घरों से दूर रख सकती हैं। [11]

13 वीं सदी के देवगिरी की Seuna यादवों प्रधानमंत्री हिमाद्री , जो धार्मिक प्रतिज्ञा और उपवास, नोट्स कि Jyestha अपनी पत्नी और संतान के लिए भाग्य को लाने के लिए एक पुरुष भक्त द्वारा पूजा की जानी चाहिए पर एक पुस्तक लिखी। [19] *Saradatilaka-तंत्र* का वर्णन करता है कि तांत्रिक अनुष्ठान में, Jyestha दोस्तों के बीच कारण शत्रुता (करने के लिए पूजा की जाती है *Vidvesa*)। *विद्वेष* के पीठासीन देवता के रूप में ज्येष्ठ को अनुष्ठान शुरू होने से पहले बुलाया गया था। [20] [21]

टिप्पणियाँ

1. ^ इस छवि का विवरण और फोटो जूलिया लेस्ली पीपी 115, 117 . में दिया गया है
2. ^ ए बी सी डी ई एफ *मणि, वेट्टम (1975)। पुराणिक विश्वकोश: महाकाव्य और पौराणिक साहित्य के विशेष संदर्भ के साथ एक व्यापक शब्दकोश। दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास. पी 360 . आईएसबीएन 0-8426-0822-2.*
3. ^ ए बी सी लेस्ली पी। 115
4. ^ केजी 1981, पीपी. 15-8
5. ^ ए बी सी डी ई किंसले (1997) पी। 178
6. ^ ए बी सी लेस्ली पी। ११६
7. ^ लेस्ली पी. 117
8. ^ ए बी लेस्ली पी। ११८
9. ^ ए बी लेस्ली पी। १२०

10. ^ लेस्ली पी. १२१
11. ^ ए बी किंसले (1997) पीपी. 178-9
12. ^ लेस्ली पीपी। 121-2
13. ^ लेस्ली पी. १०७
14. ^ लेस्ली पी. 119
15. ^ किंसले (1997), पीपी.178-181
16. ^ *गुप्ता, संयुक्ता (2001)। व्हाइट, डेविड गॉर्डन (सं.). व्यवहार में तंत्र । मोतीलाल बनारसीदास पब्लिक. पी 472. आईएसबीएन 978-81-208-1778-4.*
17. ^ लेस्ली पी. 113
18. ^ ए बी सी डी ई एफ लेस्ली पी। 114
19. ^ लेस्ली पी. 122
20. ^ लेस्ली पी. 125
21. ^ *मिश्रा, विभूति भूषण (1973)। प्रारंभिक मध्यकालीन काल के दौरान उत्तर भारत की धार्मिक मान्यताएँ और प्रथाएँ । ब्रिल। पी 28. आईएसबीएन 978-90-04-03610-9.*

संदर्भ

- *किंसले, डेविड आर. (1997)। दिव्य स्त्री के तांत्रिक दर्शन: दस महाविद्या । कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रेस। आईएसबीएन 978-0-520-20499-7.*
- *केजी, कृष्णन (1981)। स्टडीज इन साउथ इंडियन हिस्ट्री एंड एपिग्राफी वॉल्यूम 1 । मद्रास: न्यू एरा पब्लिकेशन्स।*
- *लेस्ली, जूलिया (1992)। "श्री और ज्येष्ठा: महिलाओं के लिए उभयलिंगी रोल मॉडल"। लेस्ली में, जूलिया (सं.)। हिंदू महिलाओं के लिए भूमिकाएं और अनुष्ठान । मोतीलाल बनारसीदास। आईएसबीएन 81-208-1036-8.*